लोक कथाओं की विशेषताएँ ①

लोक कथाएँ वे कहानियाँ हैं जो मनुष्य की प्रगति के साथ चलकर विभिन्न परिवर्तनों एवं परिवर्द्धनों के साथ वर्तमान रूप में प्राप्त होती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कुछ निश्चित कथानक रूढ़ियों और शैलियों में ढली लोक कथाओं के अनेक संस्करण, उनके नित्य नई प्रवृत्तियों और चरित्रों से युक्त होकर विकसित होने के प्रमाण हैं। लोक कथाओं के अध्ययन से इनकी कुछ अपनी विशेषताओं का पता चलता है। इन विशेषताओं को निम्नांकित आठ भागों में विभक्त कर सकते हैं।

1) प्रेम का अभिनव पुट, (2) अश्लील शृंगार का अभाव, (3) मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों से निरन्तर सहचर्य, (4) मंगल कामना की भावना, (5) सुख और संयोग में कथाओं का अंत (6) रहस्य, रोमांच एवं अलौकिकता की प्रधानता (7) उत्सुकता की भावना, (8) वर्णन की स्वाभाविकता।

1) प्रेम का अभिनव पुट → अधिकांश लोक कथाओं में प्रेम का अभिनव पुट पाया जाता है। मानव जीवन से संबंधित रखने वाली इन कहानियों में प्रेम का वर्णन होना नितान्त स्वाभाविक है। इनमें कहीं तो भाई और बहन का विशुद्ध प्रेम पाया जाता है तो कहीं माता का अपनी पुत्री के प्रति अकृतिम वात्सल्य प्रेम। किस प्रकार माँ अपने

Scanned by CamScanner

प्यारे पुत्र को प्राणों से अधिक प्यार करती है, गरीबी में अपने दिनों को काटते हुए भी अपने लाडले को कष्ट नहीं होने देती और उसे कभी भी अपनी आँखों से ओझल नहीं करती इत्यादि अनेक प्रकार के चित्र इन कहानियों में देखने को मिलते हैं। पत्नी का अपने पति के प्रति जिस पवित्र और दिव्य प्रेम का वर्णन इन कथाओं में मिलता है वह सचमुच ही अलौकिक और आदर्श है। इस तरह कथाओं की आधार-शिला प्रेम पर ही आश्रित रहता है।

2) अश्लील श्रृंगार का अभाव → लोक कथाओं में प्रेम का पुट प्रचुर परिमाण में होने पर भी इनमें अश्लीलता का अभाव पाया जाता है। कुटिल प्रेम - जो आधुनिक कहानियों का प्रधान वर्ण्य विषय बन गया है इनमें कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता। काम वासना या सौन्दर्य - लोभ से जनित प्रेम विशुद्ध कहानी का अधिकारी नहीं है। यह कुछ कम आश्चर्य की बात नहीं है कि ग्रामीणों द्वारा गढ़ी गई इन कहानियों में कहीं भी वासना नहीं आने पायी है। प्रेम का भद्दा प्रदर्शन आधुनिक कहानियों की विशेषता भले ही हो परन्तु लोक कथाओं का नहीं है।

3) मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों से निरन्तर साहचर्य → इन कथाओं में मानव जीवन की मूल प्रवृत्तियों से निरन्तर साहचर्य स्थापित किया

जाता है। मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों से हमारा अभिप्राय उन वस्तुओं से है जो मनुष्य के जीवन से अन्वय-व्यतिरेक से अनुस्यूत है। सुख-दुःख आशा-निराशा, काम, क्रोध, मद, लोभ, ईर्ष्या आदि ऐसी ही प्रवृत्तियाँ हैं जो सदा से बनी रही और सदा बनी रहेंगी। इन्हीं मूल प्रवृत्तियों का वर्णन इन कहानियों में उपलब्ध होता है। आजकल की अनेक कहानियाँ किसी क्षणिक घटना को लेकर लिखी जाती है। अतएव इनका स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु अधिकांश लोक कहानियाँ किसी विशेष घटना या पात्र को लेकर नहीं लिखी जाती होती है। इनकी रचना जीवन की मूलभूत प्रवृत्तियों को लेकर की जाती है। इनमें जिन घटनाओं का वर्णन होता है वे शाश्वतिक सत्य की प्रतीक होती है।

H) मंगल कामना की भावना ⇒ मंगल कामना की भावना इन कहानियों की प्रधान विशेषता है। ग्रामीण कथाकार संसार का कल्याण चाहता है। विश्व के मंगल की इच्छा करता है। उसकी यही उत्कट अभिलाषा रहती है कि संसार में सर्वत्र शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो। लोक कथाओं में —

"~~सर्वेऽत्र~~ सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात्॥"

Scanned by CamScanner

की भावना सर्वत्र व्याप्त दिखाई देती है। कहानीकार यह चाहता है संसार में सबकी भलाई हो, कोई भी व्यक्ति दुःखी न रहे।

5) सुख और संयोग में कथाओं का अन्त ⇒ लोक कथाओं का पर्यवसान दुःख में नहीं प्रत्युत सुख में होता है, वियोग में नहीं बल्कि संयोग में होता है। जन जीवन संबंधी कहानियों में दुःख निराशा, हानि और विपत्तियों के प्रसंग न आते हो ऐसी बात नहीं है, ये प्रसंग आते हैं और अधिक संख्या में ऐसी कहानियाँ पायी भी जाती है। परन्तु कहानी के अन्त में दुःख - सुख के रूप में परिवर्तित हो जाता है, निराशा आशा में बदल जाती है और हानि के स्थान पर लाभ दिखने लगता है। कथा के नायक के मार्ग से आपदाएँ आप से आप हटती दिखाई पड़ती है और अन्त में उसका पथ प्रशस्त बन जाता है। भारतीय मनीषा दुःख में जीवन के पर्यवसान की कल्पना नहीं कर सकती। इसलिए भारतीय लोक कहानियों में सुखान्त है, दुःखान्त नहीं।

6) रहस्य, रोमांच एवं अलौकिकता की प्रधानता ⇒ कुछ कहानियों में अलौकिकता का अंश भी उपलब्ध होता है। रहस्य - रोमांच, भूत - प्रेत, पिशाच, दानव परी आदि से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओं का वर्णन भी कहानियों का वर्ण्य विषय होता है। इनमें अद्भुत रस की प्रधानता रहती है। इनको सुनने में श्रोताओं की रोचकता बनी रहती

Scanned by CamScanner

है। राजाओं और वीरों के अलौकिक पराक्रम की कहानियाँ भी इसके अन्तर्गत आती हैं। राजा चन्द्रभानु की कथा इसका सुन्दर उदाहरण है। इनके सात लड़के विभिन्न देशों में जाकर वीरता तथा पराक्रम के अद्भुत कार्यों को कर दिखाया। साधारण जन ऐसी कथाओं को बड़े चाव से सुनते हैं।

7) उत्सुकता की भावना ⇒ कहानी का सबसे बड़ा गुण उत्सुकता की भावना को बनाये रखना है। जिस कहानी को सुनने के लिए श्रोतागण उत्सुक न दिखायी पड़े तो यह समझ लेना चाहिए कि उस कथा में कुछ आकर्षण नहीं है। इस कसौटी पर कसने पर लोक कथाएँ खरी उतरती हैं। इनको सुनते समय कथानक के आगे वाले अंश को सुनने की लालसा बनी रहती है। यह बात विशेषकर रूप कथाओं के विषय में पायी जाती है। श्रोताओं को ऐसी कथाओं को सुनने की उत्कण्ठा इतनी अधिक होती है कि बार-बार वे यही पूछते रहते हैं कि " इसके बाद क्या हुआ ?

8) वर्णन की स्वाभाविकता ⇒ वर्णन की स्वाभाविकता कहानी कला की एक प्रधान विशेषता है। जो ग्रामीण कथाओं में अधिक पायी जाती है। जो घटना जैसी है उसका उसी रूप में वर्णन लोक कथाओं का प्रधान लक्षण है। इनमें अतिशयोक्ति का पुट उपलब्ध नहीं होता। इसीलिए

इनमें भारतीय संस्कृति का सच्चा चित्रण प्रस्तुत है। आधुनिक कहानियों में अतिरंजना की जो प्रवृत्ति लक्षित होती है उनका इन कथाओं में प्रायः अभाव है।

इसके अलावे लोक-कथाओं की शैली बड़ी सरल तथा सीधी-सादी होती है। इनमें जिन वाक्यों का प्रयोग किया जाता है वे बड़े छोटे होते हैं। साधारण वाक्य को दौड़कर संयुक्त या मिश्र वाक्यों का इनमें अभाव होता है। जैसे "एक था राजा। उसके सात लड़के थे। सातों बड़े वीर थे इत्यादि। लोक कथाओं में गद्य की प्रधानता पायी जाती है, परन्तु बीच-बीच में पद्यों का भी प्रयोग किया जाता है, गद्य-पद्य का मेल हो जाने से कथाओं के महत्व तथा उनकी प्रभावोत्पादकता को बहुत अधिक बढ़ा दिया जाता है।

Scanned by CamScanner